डॉ. विनोद कुमार के काव्य में परिवर्तित परिवेश-चिन्तन

गुरमीत सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी) एस.यु.एस कॉलेज, गुरु हर सहाए (फिरोजपुर)
(शोधार्थी- एल.पी.यु यूनिवर्सिटी, जालन्धर)

Received: February 04, 2019 Accepted: March 22, 2019

समाज की संरचना और संस्कृति में समाजिक सूत्रपात आन्तरिक और ब्रह्म स्रोतों द्वारा होता है द्य समाज की संचरना और संस्कृति स्थिर नहीं रहतीए इसी प्रकार की संरचना को प्रस्तुत करता कविता संग्रह 'संघर्ष के साथसाथ' जो कि डॉ. विनोद कुमार द्वारा रचित है | डॉ. साहब के इस कविता संग्रह में छब्बीस कविताऐ संकलित है जिस में उन्होंने निम्न एवं मद्यवर्ग की स्थिति का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है| इस संग्रह में समकालीन समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और संस्कृति परिस्थितियों का बहुत गहराई से अध्ययन करने के संकेत मिल रहे है| कवि ने सम्पूर्ण कविता संग्रह में एक आशावादी उद्देश्य को प्रमुखता देते हुऐ विपरीत परिस्थितियों में चिन्तन होने की बजाऐ उस के अनुकूल संघर्ष करने का प्रस्ताव दिया है| यदि हम कवि के कविता संग्रह की समीक्षा करें तो उन्होंने संघर्ष को एक मौलिक और सर्वभौमिक समाजिक प्रक्रिया माना है जो प्रत्येक समाज और काल में कम या अधिक मात्र में पाया जाता है| **अमन कुमार**अपनी रचना 'योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र' में लिखते है कि "जिस देश में गरीबी,अशिक्षा,बेरुजगारी और असमानता हो और दूसरी तरफ कुछ लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपनी आकांक्षाएं बढ़ाते हैं, वहां पर प्रजातंत्रिक समाज में संकट तथा संघर्ष होता है|" [1] (कुमार 59) संघर्ष समाजिक सम्बन्धो में हर समय मौजूद रहता है| यह जीवन की एक वास्तविकत प्रक्रिया है, इसे अस्वाभाविक नहीं माना जाता| इसी का आहिसास ही कवि ने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है| व्यक्तियों और समूहों के बीच शरीरिक,भावनात्मक,संस्कृतिक तथा व्यवहारिक संबंधों में अंतर पाये जाते है| ऐसे भेद भाव ही संघर्ष के लिए उत्तरदायी होते है|

संघर्ष से तात्पर्य दो या दो से अधिक समूहों के बीच मतभेद आदि से है| यह परिस्थतियों के अनुकूल बदलता रहेता है| मानव संबंधो के बीच सतत रहने वाली यह एक प्रक्रिया है| जब व्यक्ति समूह के बीच सहयोग नहीं रहता अथवा तब वे एक दुसरे के प्रति तटस्थ भी नहीं रहि पाते, तो संघर्ष की स्थिति उत्पन हो जाती है| संघर्ष को समाज में अस्भाविक भी नहीं कहा जा सकता क्यूंकि जब सीमित लक्ष्यों को अनेक व्यक्ति प्राप्त करना चाहे तो संघर्ष स्वाभाविक हो जाता है|

प्रस्तुत काव्य-संग्रह को यदि हम हिन्दी सहित्य के इतिहास से जोड़ने का प्रयास करें तो इस दृष्टि से द्विवेदी युग में हरिऔध ने उच्चतर पदों और जाति के लोगों के द्वारा किये गए अन्याय और दुर्व्यवहार को प्रस्तुत किया था

आप आँखें खोल कर के देखिए/आज जितनी जातियाँ हैं सिर धरी/पेट में उनके पड़ी दिखलाऐगी/जातियाँ किसकी सिसकती या मरीद्य[2](नगेन्द्र 478)

कवि की कविता संग्रह 'संघर्ष के साथ .साथ' में प्रगतिवादी कवियों की झलक भी देखने को मिलती है| कवि ने पन्त,निराला,दिनकर,नरेंद्र शर्मा, शिवमंगल सुमन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और डॉ. राम विलास शर्मा की सोच को आगे बढ़ाया| इस संग्रह का आरम्भ 'कृपा शारदे माँ कर दो' नामक कविता से हुआ, इस कविता में कवि ने आशावाद संदेश के साथ भक्ति, कर्म और सत्य के प्रति अपनी दृढता को प्रस्तुत करते हुए कहते है-

तुम कृपा शारदे माँ कर दो|/मेरी वाणी में शक्ति भर दो|/कर में जब भी मैं कलम गहूँ|/मैं सत्य सत्य बस सत्य कहूँ [3] (कुमार 19)

इस कविता के द्वारा ही कवि देश काल और राष्ट्र का गुणगान करते होए माँ से सपूर्ण मानव के कल्याण की कामना भी करता है| कवि देश की तत्कालीन स्थिति को देख कर चिन्तित है| 'प्रकति-प्रथना' शीर्षक कविता में कवि ने शासन, सत्ता और समाज की मानसकिता को बयान किया है| कवि कहि रहा है कि चरों तरफ आपाधापी सी मची है, यहा कोई भी किसे के दुखों को नहीं बाटता| कवि आशावादी सन्देश देते होए कहते है कि अपने ह्रदय को मजबूत बना कर इस समाज में चलो और स्वयं रास्तों की खोज करों| कवि लिखता है:-

बहुत से लोग हैं चारों तरफ़/एक दुसरे से हो चुके अपरिचित/भीड़ ने कब दुःख बाँटे हैं /झोलियों में भरे कांटे है[4] (कुमार 21)

ऐसे ही कवि ने अपने इस कविता संग्रह में आपनी स्वानुभूति को प्रगट करते हुए 'जीने का अभिनय' नामक कविता को दर्ज किया है कवि निराश मन से समाज की दशा को प्रस्तुत कर रहा है| कवि कहता है कि वर्तमान समाज में हो रहा है उसे देख कर यह कहा जा सकता है कोई भी व्यक्ति किसी से कोई भी उम्मीद ना रखे कवि को ऐसा महिसूस हो रहा है कि हम सब के भीतर एक रावण आ बैठा है| यहा का प्रत्येक आदमी कहता है की यह सब दूसरों का दिया हुआ है लेकिन अपने भीतर झांक कर कोई नहीं देखता के यह सब

स्वीकार तो तुमने खुद ही किया है| कवि आधुनिक प्रशासन व्यवस्था की त्रासदी को देखते होए लिखता है :-

सिंहासन पर बैठ कभी/स्वयं को ईश्वर कहते/दृष्टिभ्रम फैलातें हैं/मायाजाल बनाते हैं /अपनी हवस मिटाते हैं[6] (कुमार 25)

इस काव्य संग्रह में ही दर्ज कविता 'क्षण की प्रतीक्षा' में कवि प्रकृति के माध्यम से स्वयं की अनुभूति को प्रगट कर रहा है| कवि कहि रहा है कि वसन्त रूपी ख़ुशी एक बार नहीं बल्कि कई बार निशावर हुई थी| बादल ने ख़ुशी से पुकारा था, कोकिल ने गीत सुना कर मन को खुश किया था और गगन के तारे तुम पर न्यौछावर करने तो तत्पर थे| लेकिन हें मन तुमने वो सब स्वीकार नहीं किया| कवि का मन देश की दशा को देखकर व्याकुल है और कहि रहा है कि इस ख़ुशी को में कैसे स्वीकार कर लू| कवि भगवान को कोसता हुआ कहि रहा है कि वह विपदग्रस्त जन का भी कल्याण करें| जब विपदाग्रस्त मानव खुश होगा तभी वह प्रकृति की इस ख़ुशी को स्वीकार करेगा | कवि लिखता है –

मैं भी मनाऊ बसन्त इसी ईक्षा में हैं/सबको मिले वो क्षण उस 'क्षण' की/प्रतीक्षा में हूँ[7] (कुमार 29)

'जीवन संघर्ष' शीर्षक कविता में कवि आत्मविश्वास को बढ़ावा दे रहा है उनका कहेना है कि हमकों स्वयं को ही अपना फ़र्ज निभाना है अर्थात यदि हमने अपने जीवन रूपी संघर्ष में कई बार हार का सामना किया है फिर भी नराश नहीं होना और बल्कि संघर्ष करना, अर्जुन की तरह धनुष उठाना और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिय निरंतर संघर्ष करना| कवि कहि रहा है कि कभी महलों में कमल नही खिलता अर्थात मेहनत करने के लिए तन का त्याग करना ही पड़ता है| आज के अभुमन्यु के हाथ पहिया तो है ही नहीं इसलिए पहिया टूटेगा कैसे| इस प्रकार हम कहि सकते है की इस कविता में कवि संघर्ष की ओर प्रेरित कर रहा हैं
ष्स्वर सामंजस्य के' भाव अनुकूलता और औचित्य से है इस कविता में कवि जीवन के प्रति सोच रहां है कि क्या बनेगा जीवन का, क्या इस में कोई बदलाव आएगा जैसे सदियों से परेशानियों में उलझा हुआ है इस से स्वयं को नकाल पाऐगा| कवि अपने आप को किसी चौराहे पर खड़ा पाता है और वहाँ सोच रहा है कि आगे कैसे बढ़ूँ| कवि सामान्य व्यक्तियों से प्रशन करता है कि जिन्दगी और मौत के बीच का फासला बहुत कम हैं, इस कम समय के विषय में कवि सोच रहा है कि प्रत्येक व्यक्ति को ना जाने किस बात का गरूर है, जिस गरुर के कारण वे अन्य को नफ़रत की दृष्टि से देखता है| कोयल की कूक नामक सच्चाई को कोई सुनता ही नहीं है| कवि लिखता है -

कहाँ कैसे किससे करें /उर्वरता की बात /सुबह होते ही यहाँ /हो जाती है रात[7] (कुमार 36)

ष्परवाज़' कविता में कवि ने एक उड़ान को प्रस्तुत किया है जिस में कवि कहि रहा है कि जो गुजर चुँका है उस को मुड़ कर देखता हूँ और सोचता हूँ कि, क्या तुमारा वह निर्णय उचित था| सच बोल, क्या उस समय रोज़ दीवाली थी| गुजरा हुआ कल कवि से पूछता है कि उस समय इतनी व्याकुलता नहीं थी|
'डेगू' शीर्षक कविता में कवि का प्रगतिवादी रूप देखने को मिलता है, कवि ने नागार्जुन की तरह चिंता मुक्त हो कर नेताओं पर तीखा व्यंग्य किया है -
मेरे देश के / नेताओं का हाजमा /कितना बड़ा है /जाने कबसे/डेंगू हुआ पड़ा है/जो/ईट पत्थर चारा ताबूत तोप/कोलतारा/सब कुछ हजम/ कर जाते है डेंगू के/ कीटाणुओं को भी/ चट कर जाते हैं[8] (कुमार 43)
'खाकी वर्दी नामक कविता में कवि ने यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया हैं| इस में एक गरीब चाये वाले का शोषण होता हुआ दिख रहां है| पुलिस वालों की मुफ्त में माल उड़ाने वाली प्रवृत्ति पर प्रहार किया गया है| आम स्टेशनों पर चाये आदि बेच कर गुज़ारा करने वालों की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है, जिस का पुलिस कर्मचारियों के द्वारा शोषण किया जाता है| कवि लिखता है-

एक खाकी वर्दी/ औचक निकल आई/ चाये के लिए/ पतीला धोते बच्चे पर चिल्लाई/कहाँ है तेरा बाप/ बिठाकर तुझे निकल गया आप/ ला दे! क्या पड़ा है /पेट सुबह से खाली पड़ा है/ इतना कहते ही वर्दी/ पुरे ब्रेड पकोड़े को / एक ही ग्रास में निगल गई[9] (कुमार 44)

कवि 'माँ फलेषु कदाचन' नामक कविता में लिखता है कि हें, मनुष्य तू फल की चिंता मत कर तू संघर्ष कर फल तुम्हे अवश्य ही मिलेगा| वे उदास मन के मनुष्य को कहता है कि तुमने उदासी को क्यूँ अपना रखा है| उर्मिला की तरह अपने भवन को ही जंगल बना कर एक विरह रूपी जिन्दगी को बतीत कर रहें हो| तुमने इस ख़ुशी भरे जिन्दगी के रास्ते पे अकेला चलने की क्यूँ जिद्द अपना रखीं है| कवि कहता है इस से पहले तो तुमने सब के लिय सुखों को ही बाँटा है ओर इतनी ख़ुशी को बटने के पश्चात भी तुम उदास क्यूँ हो| साथ ही कवि इस मन के उदास होने का कारण भी बता रहा है कि हमारे प्रशासन की व्यवस्था ही इस प्रकार की है वह एक हाथ में रोटी दे रहें है दुसरे हाथ से वहीं रोटी को छीन रहें है| इस विषय के संबंधित कवि के मन में प्रश्न बहुत है लेकिन कवि अपने उस उदास मन को ही फिर से कहता है कि तू अभिमन्यु की तरह क्यूँ नही दृढ बन जाता और अपने मन रूपी मंच से क्यूँ नहीं शांति का नारा लगा लेता| कवि आशावादी संदेश देता हुआ कहता है कि-

परिवर्तन प्रकृति का/ है नियम अटल /मुहावरा नहीं केवल / हैं प्रकृति सदा आलम्बन/ चाहिए उसे सम्बल/ अगर मगर की बात ना कर/ कर्म से होता असर/ वीर बनाते है सदा/ नई पगडण्डी 'औ' रास्ते/ कितने हैं आकाश देखले / समकक्ष तुम्हारे वास्ते[10] (कुमार 48)

'स्मृति तुम्हारी' शीर्षक कविता में कवि ईश्वर को पुकारता हुआ कहता है कि हें प्रीतम तुम्हारी याद आती है तो हमारा मन खिल जाता है| तेरे गीत गा गा कर में अपनी नाँव रूपी जिन्दगी को आगे धकेल रहा हूँ| कवि प्रगतिवादी संकेत देता हुआ कहि रहा है कि मै संघर्ष करके मंजिल को प्राप्त करने के पश्चात बादलों की तरह छा जाना चाहता हूँ|
इस प्रकार ही कवि अच्छे समाज की कल्पना करता हुआ 'संकल्प' नामक कविता की रचना करता है| कवि कहता है की झूठ का स्तम्भ लेकर मै यहाँ वहाँ घूम कर अपने मन को हरा रहा हूँ| कवि संकल्प लेता है कि जीवन को बदला जा सकता है-

जीवन बदला जा सकता है/अगर कृष्ण कोई आया जाए /द्वन्दग्रस्त आर्जुन को फ़िर से/ गीता ज्ञान सुना जाए/कोई नानक सज्जन ठग को/सन्मार्ग पर ले आए/ परम हंस विवेक मिले फिर/ क्यों न आनन्द छा जाए|[11] (कुमार 52)

'जलती मशाल' शीर्षक कविता में कवि मानव की पीढ़ा को समझते हुए दृढ-प्रतिज्ञा करके लोगों के हाथों में संघर्ष की मशाल को पकड़ाना चाहते है| कवि लिखता है कि चाहे रात अब भी मौजूद है लेकिन सुबह होने की आशा बरकरार है| इस नई सवेर का प्रत्येक मानव अधिकारी है| भारत की प्रशासन व्यवस्था को सामन्य जन से कहलाता है कि

बहुत हो चुका दमन-चक्र/अब हमको नहीं सहना है/ नई पटकथा लिख देंगे हम/
दीवारों पर खून से/मुक्त करो मानव को अब तो/पशुओं-सी इस जून से[12] (कुमार 54)

किसानो की दशा को प्रस्तुत करती कविता 'धनु-सन्धान' भी एक मील का पत्थर प्रतीत हो रही है| हलधरों भाव किसानों को कर्ज़ के अजगर निगल रहे है| किसानो के दर्द को मिटाने का सारे नेता लोग दावा करते है| जब सत्ता शक्ति हासिल हो जाती है उसके बाद सब भूल जाते है| कवि पूर्ण देश के किसानों की बात करते हुए कहिते है कि कश्मीर से केरल और पंजाब से बंगाल तक पुरे देश में किसानों की त्रासदी को देखा जा सकता है|
'कलम' शीर्षक कविता में कवि ने आज़ादी के पहले भारत और आज के भारत की दशा का वर्णन किया है| उस समय के देशभक्तों में अपने देश एवं संस्कृति के प्रति इतना लगा था कि वे मरने से एक पल नहीं कतराते थे लेकिन आज लोंगो में स्वार्थ की भावना होने के कारण वे खुद तक ही सीमित हो कर रहि गए है| कवि आज के मीडिया पर ही प्रश्न उठा रहा है कि आज सही मीडिया का अंत हो गया है| कवि कहि रहा है कि कलम विकाऊ ना हो तो इस की ताकत तलवार से कई गुणा अधिक होती है| जिस समय जनता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी थी उस समय आज़ादी का जनून रखने वालों ने कलम भी हाथों में उठाई थी| कलम की महत्ता को बताते हुए कवि लिखते है कि

आदर्श परम्परा उजड़े न/ मिलकर ये अहसास करें/है कलम हमारे हाथों में/हम भी कुछ प्रयास करें[13] (कुमार 62)

'पहचान' कविता के माध्यम से कवि ने दलित एवं पीड़ित जन में आत्मशक्ति के संचरण की प्रेरणा का उपक्रम किया है| 'आह का आख्यान' कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता प्रप्ति के सत्तर वर्षो के पश्चात भी देश की दुर्दशा में कोई बदलाव नहीं आया इस का चित्रण इस कविता में किया है| कवि कहेता है कि सरकारें बदलती रही और शासन व्यवस्था में भी बदलाव आया लेकिन झोपड़ी वालों की किसे ने सार नहीं ली| वह आदिवासियों,मजदूर-शमिकों की दुर्गति को देख इतना आहत है कि उन्हें स्वयं संघर्ष का बिगुल बजाने के लिए आह्वान करता है और साथ ही ईश्वर में असीम आस्था रखने वाले कवि उसे अपने ईष्ट को उपालम्भ देने में संकोच नहीं करता|
'साक्षात्' शीर्षक कविता में कवि कहि रहा है कि एक के बाद एक असफलताओं होने कारण तुम उदास मत हो| तुम अपने आप को अर्थात स्वयं को पहचानों| कवि कल्पना की उड़ान भरते हुए कहते है कि एक जब तू निराश होकर, मजबूर होकर बस्ती से दूर किसी आशा से निकला था तो दूर जंगल में एक वृक्ष के नीचे बैठ गया था| उस समय एक प्रकृति रूपी पुरुष ने आप को एक निरंतर बढ़ने का संदेश देते हुए कहा था कि यदि रात सत्य है तो दिन भी जरुर आएगा भाव दिन भी सत्य है, जीवन की सच्चाई है कि यदि हम संघर्ष करें तो सफलता हमे अवश्य मिल जाती है वह चाहे किसी भी रूप में क्यूँ ना हो| कवि स्वयं को पहचानने और उद्धम करने की प्रेरणा देते हुए कहि रहें है

संघर्ष भी सच है संघात भी सच है/निराशा क्या/रख भूल गये थे तुम स्वयं जिसको/वह दर्पण आज दिखाता हूँ/रूप तुम्हारा ही तुझको मै/साक्षत करवाता हूँ [14] (कुमार 69)

समय के साथ परिवर्तन होने एवं किसी भी अत्यचार को ना सहन करने के लिए कवि ने 'समय नहीं चुप रहने नामक' कविता को रचा| कवि कहि रहा है कि मौसम बदल चुँका है अब समय चुप रहने का नहीं है, मै अक्सर अमन और शान्ति की बात किया करता था लेकिन अब हमारा मन अन्य एवं अत्यचार के विरुद्ध बिगुल बजाने को कर रहा है|
'प्यार के गीत' शीर्षक कविता में कवि ने ईर्ष्या को मिटा कर सभी को साथ-साथ रहेना का संदेश दिया है| कवि कहि रहा है कि नफ़रत की दीवारों को तोड़ कर हमे प्यार के गीत गाने चाहिए| इस संसार में ऐसी कोई भी समस्या नहीं जिस का समाधान ना हो| कवि आशा करता है यदि हम एक दुसरे के साथ मिल कर रहे तो यह धरती स्वर्ग का रूप धारण कर लेगी, जाति धर्म से ऊपर उठ कर यदि मनुष्यता की बात की जाए तो चरों ओर प्यार ही प्यार बरसे गा|

'बीज' एक दार्शनिक कविता है जिस में कवि ने बीज को समस्त सृष्टि का आधार,अथ और इति उद्घोषित किया गया है|
'भारतीय संस्कृति' शीर्षक कविता में कवि ने भारतीय संस्कृति के बड़ेपन एवं परम्परा के प्रति निष्ठावान होने का वर्णन किया है| कवि कहि रहा है कि यदि हम अपने वेदों की समीक्षा करें तो उस में ज्ञान-विज्ञान की बर्षा हो रही है, तक्षशिला और नालंदा नामक विश्वद्यालय यहाँ होने के कारण भारत को विश्वगुरु के नाम से जाना जाता था| हमारी संस्कृति में गुरु की वाणी पापो का उपचार माना जाता था एवं संतो की कृपा से यहाँ सदाचार की भावना रहती थी| कवि हमारी संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहि रहे है कि हमारे यहाँ सभी बालक, माता पिता गुरु की सेवा करते थे| इसी कविता के माध्यम से कवि तत्कालीन संस्कृति के प्रति चिंता प्रगट करता हुआ कहि रहा है कि

व्याकुल औ बेचैन हैं क्यों सब प्रश्न तो ये गम्भीर है/सब कुछ है जब पास तेरे तो क्यों तू इतना अधीर है/धर्म त्याग जबसे पशिचम ने अधर्म ऐ नाता जोड़ा है/तबसे मानव-ह्रदय बसी हुई शन्ति ने मुख मोड़ा है[15] (कुमार 79)

'वेद-महिमा' शीर्षक कविता में कवि वेदों की महिमा का गुणगान करते दिखाई दे रहें है| कवि का कहना है के समूचे विश्व को आयुर्वेद और योग की देन इन वेदों से ही है| हमारे ऋषि-मुनियों ने इन वेदों के गुप्त रहस्यों को जनता के सामने प्रस्तुत किया| 'शीश जाए पर सिदक न जाए' नामक रचना के माध्यम से कवि ने धर्म की सर्वौच्चता को स्थापित करते हुए धर्म-रक्षार्थ गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान को स्मरण किया और उनके प्रति श्रद्धा को बयान किया है|
'साहित्यावदान'शीर्षक कविता में कवि पंजाब की धरती के ऊपर साहित्यिक रचनाकारों की परम्परा का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत किया है| कवि कहि रहा है कि वेदों की रचना भी यहाँ हुई है और यहाँ ही अर्जुन ने गीता का संदेश दिया है| गुरु ग्रन्थ साहब की स्थापना भी इसी धरती पे हुई| संतो,भक्तो,पीरों एवं गुरुजनों ने यहाँ बहुत नैतिक ज्ञान दिया है| कवि ने उपेन्द्रनाथ अश्क, श्रद्धाराम फिलौरी आदि का भी वर्णन किया जो इस धरती में पैदा हुए थे | इस पंजाब की मिट्टी की प्रशंसा करते हुए कवि लिखता है

पंच आब की ये मिट्टी है इसकी सुगन्ध निराली है/ आह जो निकले दिल से तो कविता बनती मतवाली है/शीतलता में चन्द्र जहाँ और तेज़ में ये आदित्य है/उपमा कहीं न कोई इसकी अनुपम ये साहित्य है[16] (कुमार 93)

'संघर्ष के साथ-साथ' शीर्षक कविता में कवि ने आदर्श एवं नैतिक पूर्ण जीवन बतीत करने के साथ-साथ जीवन में संघर्ष की महत्ता को बयान किया है| कवि कहि रहां है कि जिन्दगी संघर्षमही है, मनुष्य को सदैव अपने कार्य में क्रियाशील रहेना चाहिए| कवि ने इस कविता के माध्यम से उन लोंगो का भी जिकर किया है जिनका स्वार्थी मिजाज होता है, कवि ऐसे लोगों को एक आदर्श जीवन बतीत करने का संदेश देते हुए कहेते है

दो गज का कफन 'औ' दो दज की जमीं,/और क्या चाहिए इन्सा को मरते हुए[17] (कुमार 94)

राम आहूजाने अपनी रचना 'समाजशात्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य' में माना है कि "मार्क्स का दावा था कि अब तक के वर्तमान समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है | प्रत्येक समाज वर्ग हितों में भिन्नताओं अथवा उत्पादन के साधनों के स्वामित्व तथा उत्पादन के संबंधो के आधार पर वर्गों में बंटा होता है"[18] (आहूजा 71)
डॉ विनोद कुमार के इस काव्य संग्रह को हम सम्पूर्ण रूप से एक जन कल्याण की भावना का खजाना कहि सकते है, इस में समाज के प्रत्येक पक्ष का यथार्थ रूप प्रस्तुत किया है, इस काव्य संग्रह को पढ़ने के पश्चात इस बात की भी पूर्ण पुष्टि होती है कि इनकी कविताओं में इतनी रोचकता होती है की यह ह्रदय को चीर सी देती है इसी वजय के कारण ही आधुनिक मंडली के विद्वान् डॉ. विनोद कुमार को 'कातिल' नाम से पुकारते है| यदि कलापक्ष एवं भावपक्ष की दृष्टि से देखे तो यह काव्य संग्रह पूर्ण रूप से सफल रहा है इस में कलात्मकता, भावात्मकता और बौद्धिकता का सुन्दर संकलन रहां है| थोडा विरोधाभास का अधिक प्रयोग रहा है| ऐसे ही यदि भाषाशैली की बात करें तो कवि को कठिन भाषा का ज्ञान होने के पश्चात् भी सरल एवं समाज अनुकूल भाषा का प्रयोग किया जिसको हर सामन्य व्यक्ति सरलता से समझ सकता है| मै इस काव्य साहित्य को निम्न एवं मध्यम वर्ग के कल्ल्याण का उद्देश्य माना जा सकता है|

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

1. कुमार 'अमन' 'योगेन्द्र सिंह का समाजशात्र' श्रीमती प्रेस रावत, रावत पब्लिकेशन 'जयपुर' 2009, पृष्ठ-59
2. नागेन्द्र 'डॉ' 'हिंदी साहित्य का इतिहास' मयूर पेपरबैक्स ए-95, सेक्टर-5 नौएडा पचासवां संस्करण 2016, पृष्ठ-478
3. कुमार 'डॉ.विनोद' 'संघर्ष के साथ-साथ' दिल्ली पुस्तक सदन दरियागंज, नई दिल्ली पृष्ठ-9
4. वहीं पृष्ठ-21
5. वहीं पृष्ठ-25
6. वहीं पृष्ठ-29
7. वहीं पृष्ठ-36
8. वहीं पृष्ठ-43
9. वहीं पृष्ठ-44
10. वहीं पृष्ठ-48

11. वहीं पृष्ठ-52
12. वहीं पृष्ठ-52
13. वहीं पृष्ठ-62
14. वहीं पृष्ठ-69
15. वहीं पृष्ठ-79
16. वहीं पृष्ठ-93
17. वहीं पृष्ठ-94
18. 18 आहूजा 'राम' 'समाजशात्र विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य' रावत पब्लिकेशन, जयपुर (2017) पृष्ठ- 71